डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग
रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम

विषय - राजनीति-शास्त्र
कक्षा - बी. ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट - 03
पेपर सं० - 08
अध्याय - 02
दिनांक - 15.05.2020

टॉपिक - भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारण अथवा, भारत में राजनीतिक चेतना के उदय के कारण

भारतीय राष्ट्रीयता के उदय एवं राजनीतिक चेतना के विकास की शुरुआत विभिन्न प्रकारों एवं प्रयासों द्वारा प्रारंभ हो चुकी थी किंतु भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद इसका एक क्रमिक एवं योजनाबद्ध तरीके से विकास होती है इसके पीछे राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि विविध शक्ति और कारण संयुक्त थे जिसे कुछ निम्न रूपों में अभिव्यक्त किया जा सकता है —

(1.) 1857 का स्वतंत्रता संग्राम — 1857 का सैन्य विद्रोह जनविद्रोह एवं स्वतंत्रता आंदोलन का पर्याय था हालांकि यह विद्रोह असफल रहा किंतु ब्रिटिश शासक द्वारा जिस प्रकार से इसका दमन किया गया उससे जनता में असंतोष बढ़ा और अंग्रेज के प्रति घृणा की भावना बढ़ गई जो बदले के रूप में विकसित होने लगा।

(2.) राजनीतिक एकता की स्थापना — ब्रिटिश शासन में भारत में यातायात के साधनों का विकास तथा एक

केन्द्रीकृत शासन की स्थापना हुई जिससे राजनीतिक दृष्टि से भारत एक रूप में हो गया। हिमालय से कुमारी अंतरीप तक संपूर्ण भारत एक सरकार के अधीन आ गया जो आगे चलकर जनता में राजनीतिक एकता के रूप में जन्म लिया और अंग्रेजी साम्राज्य के एकता की भावना बल पकड़ने लगी।

(3.) धार्मिक और सामाजिक पुनर्जागरण — 19वीं सदी के धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलनों का राष्ट्रीयता के विकास में काफी सहयोग मिला। इनमें ब्रह्म समाज, आर्य समाज, राम कृष्ण मिशन, थियोसॉफिकल सोसायटी आदि प्रमुख हैं। राजा राम मोहन राय ने धर्म एवं समाज सुधार कार्य को प्रोत्साहित करने के लिये 1828ई. में ब्रह्म समाज की स्थापना की। स्वामी दयानंद ने आर्यसमाज की स्थापना के माध्यम से धार्मिक राष्ट्रीय नवजागरण को आंदोलन का रूप दिया तथा हिंदू जाति को नवजीवन दिया। उन्होंने अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में अनेक त्रुटियों के बावजूद स्वदेशी राज्य को विदेशी राज्य से अच्छा बताया।

सन् 1875 में स्थापित 'थियोसॉफिकल सोसायटी' द्वारा भी हिंदू धर्म के पुनरुत्थान एवं राष्ट्रीयता के विकास में सहायता मिली। इनमें मैडम ब्लैवेट्स्की, कर्नल अल्कॉट तथा विशेषकर एनी बेसेण्ट का विशेष योगदान रहा। स्वामी राम कृष्ण तथा इनके शिष्य विवेकानंद द्वारा स्थापित 'राम कृष्ण मिशन' का भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान है। इन सबों के साथ-साथ राधा स्वामी आंदोलन, देवसमाज आंदोलन आदि में उसके जनीय रहे हैं। इन आंदोलनों ने धर्म और समाज की एकता के आधार पर देश व्यापी एकता और संगठन को जन्म दिया जिससे राष्ट्रीयता की भावना विकसित हुई।

(4.) ऐतिहासिक अनुसंधान — भारतीय धर्म, संस्कृत, साहित्य, दर्शन पर विभिन्न पश्चिमी एवं भारतीय विद्वानों ने अध्ययन एवं अनुसंधान कर जो राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विवरण प्रस्तुत किया उससे यह स्पष्ट होता है कि यहां की सभ्यता समकालीन यूरोपियन सभ्यताओं से कम नहीं थी। इससे भारतीयों में अपने सभ्यता और संस्कृति में गौरव प्रधानी परिणामस्वरूप राष्ट्रीयता एवं देश भक्ति की भावना बलवती हुई।

(5.) पाश्चात्य शिक्षा — पाश्चात्य शिक्षा व्यवस्था की शुरुआत कर कुछ हद तक तो अंग्रेज अपनी उद्देश्य प्राप्ति में सफल रहे किंतु उससे पश्चिमी चिंतन एवं विचार के अध्ययन से राष्ट्रीयता एवं स्वतंत्रता को भी प्रोत्साहन मिला। राजा राममोहन राय, दादा भाई नैरोजी, वोमेश चन्द्र बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले आदि राष्ट्रीयता के संदेशवाहक पाश्चात्य शिक्षा की ही देन थे।

(6.) भारतीयों का विदेश गमन — 19वीं सदी में अनेक भारतीय शिक्षा प्राप्ति एवं अन्य कार्यों से विदेश गये जिससे उनमें प्रजातंत्रीय संस्थाओं, संगठनों का प्रभाव पड़ा एवं स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व भाव के पाठ को पढ़कर भारत में प्रगतिशील विचारों और संस्थाओं को मूर्त रूप देने का भाव जगा।

(7.) भारतीय समाचार पत्रों एवं देशी साहित्य का विकास — प्रेस, समाचार पत्र के विकास से भारतीयों को विदेशी शासन की त्रुटियों एवं भारत विरोधी प्रचार को उजागर एवं जवाब मिलने लगा। संवाद कौमुदी, बंगदेश समाचार, अमृत बाजार पत्रिका आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। इसी प्रकार बंकिमचन्द्र, मधुसूदन दत्त, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, भारती आदि की रचनाओं ने भी देशाटन, जागृति एवं राष्ट्रीयता की भावना को बल दिया।

(... शेष)

Scanned with CamScanner